खेतड़ी की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत का समग्र अध्ययन

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"
Estd. 2008

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध रूपरेखा

विषय-इतिहास

शोध निर्देशक
डॉ. रामचेत यादव

शोधार्थी
विरेन्द्र कुमार चान्देला

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान)

शोध प्रस्तावना:-

खेतड़ी राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में है । खेतड़ी देश की राजधानी दिल्ली से 180 किलोमीटर दूर स्थित है एवं जयपुर से 150 किलोमीटर दूर स्थित है । खेत सिंह निर्वाण के नाम पर खेतड़ी का नाम खेतड़ी पड़ा । खेतड़ी ठिकाने के संस्थापक गोपाल सिंह, सार्दुल सिंह शेखावत के वंशज थे । शेखावत सरदार मूल रूप से जयपुर राज्य से निकले थे । खेतड़ी की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत पर नजर डालें तो इसका इतिहास हमें हड़प्पा सभ्यता के समय से प्राप्त होता है । हड़प्पा सभ्यता के स्थनों में खेतड़ी से ही तांबा जाता था । आज भी खेतड़ी ताम्र नगरी के रूप में अपनी पहचान रखती है । आज भी खेतड़ी ताम्र उत्पादन में देश में प्रमुख स्थान रखता है । इसके सुनारी क्षेत्र से प्राप्त लोहे की भट्टियॉ इस क्षेत्र में वैदिक सभ्यता के विकास को दर्शाती हैं । विभिन्न प्रकार की पहाड़ी, मैदानी व मरुस्थलीय स्थल आकृतियां खेतड़ी क्षेत्र में पाई जाती हैं । मनोरम व सुरम्य पहाड़ियों के बीच स्थित यह शहर पर्यटकों को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करने वाला है । उत्तरी राजस्थान में पाकिस्तान की सीमा से पूर्व में चलने पर अरावली की पहाड़ियां यहीं पर नजर आती हैं । इस प्रकार यह प्राकृतिक महत्व के साथ - साथ सामरिक महत्त्व भी रखता है । खेतड़ी रियासत काल में जयपुर रियासत के प्रमुख ठिकाने के रूप में विद्यमान था, जिसके अधीन बबाई, कोटपूतली, जसरापुर तथा शिमला आदि तहसीलों के रूप में अवस्थित थे । इस प्रकार खेतड़ी का आधिपत्य शेखावाटी और तोरावटी दोनों भागों में था । यहां के शासक वीर, साहसी, विद्यानुरागी, कला प्रेमी रहे हैं । यहीं के राजा अजीत सिंह जी बहादुर जो एक विद्यानुरागी एवं गुणग्राही शासक थे । राजा अजीत सिंह ने ही विविधिशानंद से विवेकानंद नाम रखने की सलाह के साथ ही शिकागो धर्म सभा में जाने का खर्च भी प्रदान किया । जहां जाकर स्वामी विवेकानंद ने भारत का नाम विश्व में ऊंचा कर दिया । आज खेतड़ी ताम्र नगरी के साथ-साथ विवेकानंद नगरी के रूप में प्रसिद्ध है । विद्यानुरागी, साहसी, कलाप्रेमी खेतड़ी के राजाओं ने गढ़, किलों, महलों के साथ-साथ मंदिरों, बावड़ियों, छतरियों का निर्माण करवाया जो उनकी थाती के रूप में आज भी विद्यमान हैं । इसके अलावा खेतड़ी क्षेत्र में अनेक संत महात्मा हुए जिन्होंने यहां की संस्कृति को भरा पूरा करने में योगदान दिया । इस क्षेत्र में अनेक धार्मिक स्थल बावड़ियों, तालाबों, छतरियों का निर्माण राजाओं, सेठ- साहूकारों द्वारा किया गया। विभिन्न प्रकार के रीति-रिवाज संस्कार यहां की विरासत से हमें प्राप्त होते हैं ।

शोध के उद्देश्य एवं महत्त्व :-

खेतड़ी ठिकाने के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थलों पर बहुत से विद्वानों ने अध्ययन व शोध कार्य किया है, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के बहुत से स्थल हैं, जिनका अध्ययन नहीं किया गया है । प्रस्तुत शोध में खेतड़ी के प्रमुख सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के स्थलों का अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा ।

इन प्रमुख स्थलों के अध्ययन का महत्त्व व प्रासंगिकता निम्न प्रकार से होगी : -

1. सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व की ईमारतों, भवनों, किलों की स्थापना का ऐतिहासिक परिचय प्रकाश में आयेगा ।
2. खेतड़ी के नगर स्थापत्य, जल स्थापत्य, स्मृति एवं मंदिर स्थापत्य, वास्तु स्थापत्य तथा हस्त शिल्प पर प्रकाश डाला जायेगा ।
3. खेतड़ी क्षेत्र के धार्मिक व पर्यटन महत्त्व के प्रमुख स्थलों की जानकारी प्रकाश में आयेगी ।
4. इन स्थलों का विभिन्न संप्रदायों , पंथों व समाजों से संबंध को देखा जा सकेगा ।
5. खेतड़ी क्षेत्र के मेलों, त्योंहारों, सामाजिक रीति- रिवाजों, लोक नृत्य व लोक वाद्यों का सामाजिक जीवन पर प्रभाव रेखांकित किया जा सकेगा ।
6. वर्तमान में पर्यटन के विकास में ये कैसे सहायक हो सकते हैं इसको रेखांकित किया जा सकेगा

शोध के उद्देश्य :-

इसी प्रकार इस शोध कार्य के उद्देश्यों को निम्न माध्यम से रेखांकित किय जा सकता है :-

1. खेतड़ी ठिकाने की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को प्रकाश में लाना ।
2. सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के इन स्थलों का वर्तमान में अस्तित्व व परिचय प्रस्तुत करना ।
3. खेतड़ी की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत का वर्तमान सांस्कृतिक जीवन में जो महत्त्व है, उसको प्रकाश में लाना।
4. खेतड़ी क्षैत्र में अभी भी ऐसे सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के स्थल हैं, जिनका अध्ययन नहीं किया गया है । प्रस्तुत शोध के माध्यम से सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के इन स्थलों का अध्ययन किया जा सकेगा ।

शोध परिकल्पना:-

1. प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से जयपुर रियासत के खेतड़ी ठिकाना, वर्तमान में झुंझुनू जिले का उपखंड के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व के प्रमुख स्थलों की ऐतिहासिकता प्रकाश में आ सकेगी ।
2. इस अध्ययन से खेतड़ी के धार्मिक स्थलों से संबंधित संप्रदायों, संतो के द्वारा समाज हित के लिए जो प्रयास किए गए उनको जन-जन तक पहुंचाया जा सकेगा । इससे समाज की और अधिक उन्नति संभव हो सकेगी एवं वर्तमान समाज में विद्यमान विभिन्न कुरीतियों से समाज को मुक्त कराने में सफलता मिल सकेगी ।
3. खेतड़ी की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत के स्थलों का अध्ययन जब पर्यटकों तक पहुंचेगा तब निश्चित रूप से खेतड़ी क्षैत्र में आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी व खेतड़ी में पर्यटन उद्योग विकसित होगा ।
4. इस अध्ययन से खेतड़ी की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर जो संरक्षण की अवहेलना से ग्रस्त हैं उनके संरक्षण को भी प्रोत्साहन मिलेगा। इसके लिए भी यह शोध प्रबंध महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा ।

शोध पद्धतियां:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन मैं निम्नलिखित शोध पद्धतियां उपयोग में लायी जायेगी :-

1. फील्डवर्क एवं सर्वे :- खेतड़ी क्षेत्र के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्त्व के प्रमुख स्थलों का सर्वे किया जाएगा। उनकी स्थापना व ऐतिहासिकता को प्रकाश में लाया जाएगा।
2. वर्गीकरण :- इन स्थलों का स्थापत्य, कला, धार्मिक, संप्रदाय, पंथ व पर्यटकीय महत्त्व के अनुसार इनका वर्गीकरण करके अध्ययन किया जायेगा।
3. प्रश्नोत्तरी :- सर्वे के दौरान इन स्थलों का भौतिक रूप से अध्ययन किया जाएगा। इनसे जुड़े व्यवस्थापकों से व्यक्तिगत संपर्क कर सामग्री एकत्रित की जाएगी। इसके अतिरिक्त अनुयायियों से साक्षात्कार करके भी आवश्यक सामग्री एकत्रित की जाएगी। इन स्थलों पर आने वाले पर्यटकों तथा पर्यटन से जुड़ी विभिन्न सरकारी व निजी संस्थाओं से भी जानकारी एकत्रित की जाएगी।
4. पूरालेखीय विधि :- संबंधित स्थलों के पूरालेखिय साक्ष्य एकत्रित किए जाएंगे। इस संबंध में पुराने रिकॉर्ड, पौथियों, बहियों, धार्मिक ग्रंथों, ऐतिहासिक ग्रंथों व अन्य सामग्री का अध्ययन किया जाएगा।

साहित्यिक पुनरावलोकन :-

वर्तमान सभ्यता व संस्कृति के विकास में पूर्व कालीन सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण योगदान रहता है I सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत को सहजने में संबंधित साहित्य का भी अपना योगदान रहता है I खेतड़ी की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत के अध्ययन व सर्वेक्षण में पूर्व रचित साहित्य, ग्रंथ, लेख स्पष्ट रूप से सहायक सिद्ध हुए।

सर्वप्रथम 'खेतड़ी का इतिहास' झाबरमल शर्मा द्वारा रचित पुस्तक जिसके अध्ययन से मुझे शोध विषय चयन तथा विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त हुई I उक्त पुस्तक में खेतड़ी ठिकाने का आरंभ से स्वतंत्रता तक का इतिहास मिलता है I 'राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परंपरा एवं विरासत' डॉ. हुकमचंद जैन, डॉ. नारायण लाल माली द्वारा रचित पुस्तक से संस्कृति व परंपराओं की जानकारी प्राप्त हुई I 'राजपूताने का प्राचीन इतिहास' पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा रचित पुस्तक से विषय के अध्ययन से संबंधित जानकारी प्राप्त हुई I 'शेखावाटी का इतिहास और स्थापत्य' डॉ. अमित मेहता से खेतड़ी के इतिहास व स्थापत्य के संबंध में में जानकारी प्राप्त हुई। 'शेखावाटी का प्राचीन इतिहास' सुरजन सिंह शेखावत से शेखावाटी के इतिहास की जानकारी प्राप्त हुई I 'शेखावाटी वैभव' टी. सी. प्रकाश द्वारा रचित से खेतड़ी की विरासत की जानकारी प्राप्त हुई I 'प्राचीन भारत का इतिहास' के. सी. श्रीवास्तव से खेतड़ी का हड़प्पा स्थलों से संबंध होने की जानकारी प्राप्त हुई I 'मंदिरों का नगर' शेखावाटी उद्गार पाक्षिक पत्रिका में गोविंद राम हरितवाल द्वारा लिखित लेखों से खेतड़ी के इतिहास व विभिन्न स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है I 'राजस्थान का प्राकृतिक सौंदर्य :-लोक तीर्थ ढ़ोसी' शेखावाटी उद्गार पाक्षिक पत्रिका में ताराचंद शर्मा द्वारा लिखित लेख से ढ़ोसी तीर्थ स्थल के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई I शेखावाटी उद्गार पाक्षिक पत्रिका गोविंद राम हरितवाल द्वारा संपादित के लेखों से खेतड़ी के भोपालगढ़, विभिन्न मंदिरों, लोक तीर्थों, स्वामी विवेकानंद व अजीत सिंह के संबंधों, खेतड़ी की विरासत की वर्तमान स्थिति आदि के बारे में जानकारी प्राप्त हुई I

इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ जूलॉजी एग्रीकल्चर एंड एनवायरमेंट साइंसेज के वॉल्यूम- 3 (जनवरी- दिसंबर 2015) मैं डॉ. मुकेश कुमार शर्मा के लेख द्वारा भोपालगढ़ (खेतड़ी) के प्रमुख दर्शनीय स्थलों की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है । गोपीनाथ शर्मा द्वारा रचित पुस्तक 'राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास' से हमें यहां की सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्राप्त होती है । हिंदी पत्रिका 'उदय' भारतीय संस्कृति के तृतीय संस्करण 1997- 98 के अध्याय 4 म्हारी खेतड़ी, नरेश कुमार शर्मा द्वारा लिखित लेख से हमें खेतड़ी के गढ़, तालाब ,मंदिरों व अन्य दर्शनीय स्थलों के के बारे में जानकारी मिलती है ।

प्रस्तावित शोध का अध्यायवार विवरण:-

अध्याय 1. खेतड़ी की भौगोलिक पृष्ठभूमि

अध्याय 2. खेतड़ी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अध्याय 3. खेतड़ी के विभिन्न सामाजिक वर्ग एवं जनजीवन

अध्याय 4. खेतड़ी के विविध धर्म एवं संप्रदाय

अध्याय 5. खेतड़ी की लोक संस्कृति

अध्याय 6. खेतड़ी में स्थापत्य कला के प्रमुख केंद्र (गढ़, महल,मंदिर,छतरियां, बावड़िया,बांध, तालाब)

अध्याय 7.उपसंहार

संदर्भ सूची

1. प्राथमिक स्रोत

A. सर्वेक्षण स्थल :-खेतड़ी ठिकाने के अंतर्गत आने वाले गढ़, किले, महल, नगर, मंदिर,बावड़िया, बांध, छतरियां

B. सचिवालय,संग्रहालय एवं अभिलेखागारीय स्रोत :-

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
2. बिरला संग्रहालय, पिलानी
3. राजकीय संग्रहालय हवामहल, जयपुर
4. राजकीय संग्रहालय, सीकर
5. अल्बर्ट हॉल संग्रहालय, जयपुर

2.द्वितीयक स्रोत

A.संदर्भ साहित्य सूची

1. पंडित झाबरमल शर्मा : खेतड़ी का इतिहास
2. मोहन सिंह : शेखावाटी में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, झुंझुनू, रविंद्र प्रकाशन, 1990
3. शर्मा,गोपीनाथ : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर,

राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1999

4. सक्सेना,हरिमोहन : राजस्थान का भूगोल,जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2022

5. श्रीवास्तव,आशीर्वादीलाल : भारत का इतिहास, आगरा, शिवलाल अग्रवाल, 1998

6. प्रकाश,टी.सी. : शेखावाटी वैभव, शिमला, झुंझुनू, शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान,1993

7. नीरज ,जयसिंह एवं शर्मा, बी.एल. : राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,2004

8. शेखावत, रघुनाथ सिंह : शेखावाटी का सांस्कृतिक इतिहास, झुंझुनू, ठाकुर मल्लू सिंह स्मृति ग्रंथागार,2006

9. हर्ष,हरदान : राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति, जयपुर, आशीर्वाद पब्लिकेशंस,2016

10. नंदी, दीपक : राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2014

11. चौधरी, राजेंद्र सिंह : राजस्थान का भौगोलिक अध्ययन, आशीर्वाद पब्लिकेशंस

12. पंडित झाबरमल शर्मा : शेखावाटी के शिलालेख

13. शर्मा-व्यास : राजस्थान का इतिहास प्रारंभ से 1956 ई

14. डॉ. हुकुमचंद जैन व डॉक्टर नारायण लाल माली : राजस्थान का इतिहास संस्कृति परंपरा एवं विरासत

15. राय बहादुर पंडित गौरी शंकर हीराचंद ओझा : राजपूताने का प्राचीन इतिहास

16. डॉ अमित मेहता : शेखावाटी का इतिहास और स्थापत्य

17. सुरजन सिंह शेखावत,झाझड़ : शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास

18. डॉ. एच.एस.आर. : शेखावाटी का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास

19. के. सी. श्रीवास्तव : प्राचीन भारत का इतिहास

20. डॉ. राम प्रसाद व्यास : आधुनिक राजस्थान का इतिहास

21. डॉ. गोपीनाथ शर्मा : राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी

22. डॉ. बी सी जाट : राजस्थान का भूगोल

23. आचार्य हरफूल : शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान

24. श्री लाल मिश्र : शेखावाटी के किले

25. श्री तारा चंद्र प्रकाश : शेखावाटी के प्रमुख दुर्ग

B.शोध पत्र पत्रिकाएं

1. मारू भारती, पिलानी
2. सुजस, जयपुर
3. शेखावाटी का इतिहास, बिसाऊ
4. पाथेय कण, जयपुर
5. हिंदी पत्रिका उदय
6. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ जूलॉजी एग्रीकल्चर एंड एनवायरमेंट साइंसेज

C.स्थानीय पत्रिकाएं

1. शेखावाटी उद्गार
2. वीर वीरांगना

D.समाचार पत्रिकाएं

1. राजस्थान पत्रिका
2. दैनिक भास्कर
3. दैनिक नवज्योति

E.मौखिक साक्ष्य

1. सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार (शिक्षक, पुजारी, श्रमिक,व्यवसायी, मूर्तिकार,कारीगर)
2. श्री गोविंद राम हरितवाल (लेखक,संपादक स्थानीय पत्रिका) से मौखिक साक्षात्कार